# Types of Reading
# पठन के प्रकार

पठन मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं (1) सस्वर पठन (2) मौन पठन।

## 1. सस्वर पठन
## Reading Aloud

सस्वर का अर्थ है तीव्रता से अथवा स्वर सहित पठन करना। अनेक अनौपचारिक अवसरों पर व्याख्यान देते समय, वाद-विवाद एवं गोष्ठियों में अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से कहने के लिए इसी पठन या वचन का रूप प्रयुक्त होता है। शुद्ध, प्रभावपूर्ण वाचन श्रोताओं पर विशिष्ट प्रभाव डालता है, यही नहीं वक्ता का अपना व्यक्तित्व भी निखर उठता है। सस्वर वाचन से ही व्यक्ति में आत्म-विश्वास जाग्रत होता है तथा भाषा प्रयोग की क्षमता विकसित होती है। उसका संकोच समाप्त हो जाता है और नेतृत्व के गुणों का विकास होता है।

सस्वर पठन के गुण :-

1. शुद्ध ध्वनियों का ज्ञान होना चाहिए।
2. उच्चारण का शुद्ध अभ्यास होना चाहिए।
3. स्वर की स्पष्टता होनी चाहिए।
4. भाषा में प्रवाह एवं गति पर पूर्ण ध्यान रखा जाना चाहिए।
5. स्वर में रसात्मकता हो।
6. वाचन करते समय आनन्द की अनुभूति।

Scanned by TapScanner

# मौन पठन
# Silent Reading

लिखित भाषा को बिना उच्चारण किये शान्तिपूर्वक पढ़ने और पढ़कर उसका अर्थ ग्रहण करने की क्रिया को मौन पठन कहते हैं। पठन का अभ्यास करवाकर अध्यापक विद्यार्थी के जीवन में एक स्थायी महत्व की बात जोड़ता चलता है क्योंकि पठन विशेषकर मौन पठन आजीवन उसका साथ देता है। यही कारण है कि पठन की सर्वोत्कृष्ट सफलता सस्वर-पठन में नहीं बल्कि मौन पठन में है क्योंकि मौन पठन हमारे लिए अधिक व्यावहारिक, सुगम और उपयोगी है।

## मौन पठन का महत्व

1. समय की बचत :- मौन पठन में समय की पर्याप्त बचत होती है।
2. व्यक्तिगत प्रयोग में उपयोगी :- व्यक्तिगत प्रयोग की दृष्टि से मौन पठन सर्वाधिक सुगम, स्वाभाविक, सुविधापूर्ण और व्यावहारिक तरीका है।
3. श्रम एवं शक्ति की बचत :- मौन पठन की तुलना में सस्वर पठन अधिक थकाने वाली प्रक्रिया है।
4. स्वावलम्बन की भावना का विकास :- विद्यार्थी अपने पढ़कर समझने का प्रयास करता है जब बालक को अपने शक्ति का ज्ञान होता है।
5. मौन पठन में धैर्य, एकाग्रता, बोधगम्यता तथा उचित आसन एवं मुद्रा का ध्यान रखना चाहिए।

Scanned by TapScanner